वर्णित रस

वर्णित रस

उमेश पासवान

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-71-6

मूल्य : भा. रू. २००/-

पहिल संस्करण : २०१२

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८. दूरभाष- (०११) २५८८९६५६-५८

फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by : Umesh Mandal.

Distributor :

Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul),

मो.- ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Virnit rus : Anthology of Maithili Poems by Umesh Paswan

उमेश पासवानक कविता संग्रह
“वर्णित रस”

कविकेँ युवापर भरोस छन्हि, आ तेँ युवाकेँ सम्बोधितो करै छथि आ ओकर आह्वानो करै छथि, जेना “हम युवा” कवितामे - जाति-धर्म/ मजहब केर नामपर/ षडयंत्र रचैए कियो/ हमर देशकेँ/ भीतर आबि कऽ/ आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो

आ तकर सम्बन्ध हुनकर “जीतक झण्डा” कवितामे भेटत जेना:- जरै जाउ/ वतन केर दुश्मन/ आगि सुनगाएल करू।

ई जे दुश्मन अछि सएह फहरबाबइए जीतक झण्डा:- आगि सुनगाएल करू/ जीत केर झंडा फहराएल करू आ “हम युवा”मे सेहो ओ कहै छथि:- आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो/ भारतवासी शेर छी/ शेरकेँ मादमे आबि कऽ/ जगबैए कियो। कारण जे देशक युवा छथि से:- हम छी गोली,/ हम छी बारूद/ हमही खंजर तलवार छी। तखन ऐ गोली लेल पेस्तौल, बारुद लेल आगि के छथि? ओ छथि युवा जे छथि खंजर आ तलवार।

तँ की दुश्मनी आधारित जोश छन्हि हुनकर कविता? नै से नै अछि- जौं दोस्तीक लेल हाथ बढ़ाएब/ तँ हमही फूलक माला/ गला केर हार छी। कविकेँ टंगघिच्चा-घिच्चीक खेल नै पसिन्न छन्हि। आ कवि कहै छथि।

ऊपरसँ नूनू बौआ/ भितरे-भितर कहैए बकलेल/ बर्षोसँ देखि रहल छी/ हर तरहसँ दलितक उपेक्षा।

बाढ़िक प्रकोप कविकेँ कहबापर विवश करै छन्हि: केना कऽ ऐबेर खेतक आड़िपर/ जा कऽ कहब/ सेर-बरोबरि/ उखैर सन बीट/ समाठ सन सिस। गबहा संक्रान्तिपर कविकेँ कहऽ पड़ै छन्हि: केना कऽ गुजर चलत/ उपजा कऽ कास-पटेर। ओ कोसीकेँ कहै छथि: कऽ देलिऐ मिथिलाकेँ दू-भागमे/ अहाँ पूबमे सहरसा-सुपौल/ पछिममे मधुबनी-दरभंगा/ बिचमे अगबे बालु आ धूल।

मुदा फेर निर्मल्लीक पुल बनबाक चर्च: कहू आब कतेक चुप रहब/ ऐबेर हम बना देलौं पुल।

पढ़ल-लिखल दलितक सामान्य दलितक प्रति व्यवहारपर जतेक अम्बेडकर दुखी रहथि ततबे चिन्ता उमेश पासवानकेँ सेहो छन्हि: स्वयं दलित छी/ दलितक दरद जनै छी/ किछु व्यक्तिक किरदानीसँ चकित छी/ दलित

भऽ कऽ ओ/ व्यक्ति अपनो समाजकेँ बिसरि गेल/ अप्पन भाषा-भेष छोड़ि कऽ/ दोसरक रंग-ढंगमे ढलि गेल।

ओ समाजसँ पुछै छथि: हम दलित छी/ मेहनति-मजदुरी कए कऽ बितबै छी अपन जीवन/ तैयो जरैत अछि।

कवि जगदीश प्रसाद मण्डल जी सँ प्रभावित छथि आ से ओ एकटा कविताक माध्यमे कहै छथि: हम छी सेवक मैथिल/ जगदीश बाबूक चेला/ नै हमरा लड्डू खियौलनि/ नै देलथि मिश्रीक ढेला।

मुदा हास्यसँ ओ दूर नै गेल छथि:

झोटा झोटौबलि/ हेतौ नटिनिया/ तोरा संग अही बेर गे।

वसन्तक आगमनसँ मात्र फूल-पात नै आन-आन जीवनसँ सम्बन्धित वौस्तुपर ध्यान जाइ छन्हि हुनकर: गाछ-वृक्षमे नव कनोजरिक संग मोजर फूल निकलैत अछि/ खेतमे गहुम-खेसारी तिसी-मसुरी तोरीक फूलसँ समुच्चाह बाध गमकैत अछि/ मधुमाछी लगौने सेनुरिया आमक गाछपर छत्ता देखि कऽ लुक्खी डरैत अछि/ अरहुलक फूल चूसि कऽ फुलचोभी चिहुकैत अछि/ कौआ आ कोइलीमे भेल अछि कनाइर।

पानि नै चलबाक गप नै बुझाइ छन्हि हुनका: देहसँ देह केना छुबाइ छै/ किएक नै चलैए हमर छुअल पानि यौ/ कोन जुलुमक सजा हमरा दऽ रहल छी/ किअए बुझै छी हमरा अपमानी यौ।

सुदामा आ कृष्णक दोस्तीकेँ सभ अलग कऽ देलक: दुनू दोसकेँ अलग कऽ देलक लोक/ अप्पन रास्ताक दिवार जकाँ/ हँसैत खेलैत...।

आ ई दशा किए भेल? :- सहलौं सभ किछु सलहेशक संतान रहितो/ जहिया तक चुप रहलौं हम।

आ कहै छथि: कतेक लिखब दलितक बेथा/ सलहेश गामक संदेश।

मुदा की मिथिलाक भाषा संस्कृति ककरो अनकर छी? नै ई तँ हमर छी आ तै पर गर्व करै छथि कवि:

हरक पाछाँ बगुला घुमैए/ हरबाहा जोरसँ बरदकेँ बाबू भैया कहि हँकैए।

देशक विकास आ नेता पर हुनका आक्रोश छन्हि: ऐठामक नेता छै माला-माल/ रोड-सड़ककेँ देखियौ तँ/

कदबा गजार सन छै थाल।

आ जे बड़का-बड़का राष्ट्रीय राजमार्ग (नेशनल हाइवे, एन.एच.) छै से तकर विवरण किछु एना छै: मौतक चौराहा बनल अछि एन.एच भुतहा मोड़।

आ लोकक दशा-दिशापर मुर्दा सेहो चिन्तित अछि: गारल मुर्दा छटपटा रहल अछि/ भितरसँ अंगुरी

अप्पन उठा रहल अछि।

नारीक कर्मनिष्ठ स्वभावपर हिनकर लेखनी खूब चलल छन्हि: ओमहर बिआ जे उखारै छै महिला जन/ कोइ करै छै, सासु-ननदिक निना-बिना/ कोइ गबै छै सोहर-समदौन।

कवि तुकमिलानीमे सेहो ढेर रास गप कहि जाइ छथि, पंजाबमे होइत मजदूरक पलायनक चर्च देखू:

जौं अखार महिनामे बुढ़ बड़द/ पजरामे दरद/ पंजाबमे मरद अछि/ तँ समझू हे गेलहे घर छी।

ओ आह्वान करै छथि: साहित्यक दलिदर कतेक जुलुम करैए हमरापर/ कियो तँ बाजू/ कियो हमरा दिससँ अवाज उठाउ।

आ अधिकार तँ चाहबे करी: अप्पन सोल्हनी बला रसा आब नै सुनब हम/

बर्खा तोड़ि दैए बान्हकँ आ बना दैए गाम कँ कोसी आ कमला: लधने छल सतहिया/ ढौसाबेंग किड़ी-मकौड़ी

करै छल सोर/ भुरुकुबा कनी उगल छल चुह-चुहिया।

तँ की कहल जाए ऐ ‘‘वर्णित रस’’ सभकँ। की कविक वसन्त मात्र फूल-पात देखैए जे मात्र सुगन्ध दैए, आँखिकँ सुख दैए, मुदा जरल पेटकँ से नीक लगतै? तँ कविक वर्णित वसन्तक रस ओ फल विहीन सुन्दर फूल नै भऽ सकैए, आ से नहिये अछि। दलित विमर्श दलित द्वारा, आ ओइ दलित द्वारा जेकर धुआधजा छै सलहेश सन, नै बिसरल अछि अपन संस्कृति, बोली-वाणी, नै बिसरल अछि सोहर-समदौन। आ से छथि उमेश पासवान। आ जे हुनकर वसन्तकँ देखबाक, एन.एच.क चौराहाकँ देखबाक दृष्टि फराक अछि तँ हुनकर कविता सेहो फराक अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर १८ मइ २०१२

आमुख

जनकल्याणक लेल
पहिल अथक प्रयास छी वर्णित रस।
देशमे बढ़ल भ्रष्टाचारक
वैदिक इलाज छी वर्णित रस।
जनाधिकारक लेल
बुलंद आवाज छी वर्णित रस।
दलित उपेक्षित वर्गक
पहिचान छी वर्णित रस।
ऊँच-नीचक भेद-भाव
रखनिहारक ऊपर
शब्दक प्रहार छी वर्णित रस।
साहित्य-पुरुष जगदीश प्रसाद मण्डल,
गजेन्द्र ठाकुर जीक
असिरवाद छी वर्णित रस।
साहित्य सेवामे जुटल व्यक्ति
उमेश मण्डलक प्रेरणाक
परिणाम छी वर्णित रस।
मैथिल-मथिलाक आ अपन मातृभाषाक
गुणगाण छी वर्णित रस।
शब्दकेँ समेटि पोथिक रूप
देनिहार श्रुति प्रकाशन केर
अविष्कार छी वर्णित रस।

अनुक्रम

पुर्णिमा
रिश्ता
अज्ञानी
कनी देखू
मास्टरक बहाली
फागुनमे
श्यामल मोहे
जीतक झंडा
युवा
हम युवा
पथिक
हमहूँ कनै छी
एना किएक
जितिया
डगर
रमल छी
संत
बन्हन
संघर्ष जारी रखब
भरदुतिया
गवहा संक्राति
किमती भोट
असली-नकली
कोसी
मच्छर रानी
हरिजन
हम छी मैथिली
बौकी
चौके-चौक
ठेँस
पेटक खातिर
जगदीश बाबू
उजरल घर
जीवनक नैया
डर
नटीन
बताह
ज्ञानक नव ज्योति
केहेन चालि
बसन्त
योद्धा

कागज

सादा कागज छी हम
सादगी समाएल अछि हमरामे
मुदा तखनो हम गुलाम बनल छी
सतरंगी रंगक कलमकेँ
पूर्ण अधिकार जमौने अछि हमरा ऊपर
घेरल रही छी हम
कलमक मोइखसँ
आबद्ध भऽ देबालसँ
घेरल रहै छी हम
शान्तचित्त निश्चल मनसँ
मुदा तखनो असंख्य
शब्द चित्रसँ दबल रहै छी हम
तियाग-बलिदान दऽ कऽ हम अपन
एक देशभक्त सन समाज केर
सेवामे लगल रहै छी हम
सादा कागज छी हम
सादगी समाएल अछि हमरामे।

समाज

खुशामदी आ ने बेगारी करब हम
अपन कर्मक बाटपर सदिखन चलब हम
मेहनति कऽ अपन भाग्यक
लेल परिलक्षित भऽ कऽ
सदिखन आगू बढ़ब हम
पुरान अवधारणाकेँ समाज
अखनो धरि पजिऔने अछि
ऊँच-नीच जाति-पाति
अनुसारे काम-काजकेँ
ओकरा बदलब हम
दाब-चाप, दहेज-अशिक्षा, अन्धविश्वासक
जालकेँ तोड़ब हम
मृत्युसैय्या जे धेएने अछि
दलितक अधिकार
ओकर
समानता हेतु लड़ब हम।

रावण-कंश

मूर्छित भऽ खसल भूमिपर
गुमानक ढेरपर
जा कऽ बैसल छल ओ
तृष्णा प्रतिसोधक
आगिमे जरैत सियाह सन
लगैत छल ओ बिनु परबाह केने
सुकर्म तियागि कऽ
अधर्मक बाटपर
चलल छल ओ
जितबाक लेल
पुरे विश्वकेँ
लैस भऽ कऽ
आधुनिक परमाणु हथयारक संग
विनाशक डंका बजेने छल ओ
खूनसँ रँगि कऽ अपन हाथ
अमेरिकाक वर्ल्ड ट्रेड सेन्टरसँ
शुरूआत केने छल ओ
किछु छनक लेल
थर्ड़ा उठल ओ मानव हृदए
सोचमे पड़ि गेल
की रावण-कंश अखन धरि
नै मारल गेल जना
हू-ब-हू कर्मसँ
एक्के साँचमे गढ़ल सन लगै छल ओ
पापक घैल
जखन भरल एक दिन
मूर्छित भऽ खसल भूमिपर।

भरल घैल

शीतल पानिसँ भरल घैल
आइ लड़ि रहल अछि
अपन असतित्व बचैबाक लेल
बचौने अछि अपन डंढक
मोस्किलमे पड़ल अछि
सूर्जक किरण
गुस्सा रहल अछि ओ
उम्मस भरल गर्मीपर
जे बेर-बेर
प्रयास केलाक बादो
भेद नै पाबि रहल अछि
शीतल पानिसँ भरल घैलक
कमजोर पड़ि गेल सूर्जक किरण
किएक तँ
पानि सहने अछि
सभ दुख-दर्दकेँ
लड़ि कऽ पहाड़सँ
खसि कऽ झरनासँ
बहैत नदीक धारामे
निश्चल-अविचल मनसँ
पहुँचल अछि आइ
घैल तक।

कलजुग

शिशक टुकड़ीकेँ
बिछौन बनाकेँ
हम सुतैत छी
अपन करेजमे काँटकेँ नुका
रखैत छी हम
गरदनिमे भ्रष्टाचारक माला
पहिरने रहैत छी हम
रोजे करबै छी नव-नव घटना
लूट-हत्या, चोरी-डकैती
तखनो चैनसँ रहै छी
जाति धर्म मजहब केर
नाओंपर
पैघ-पैघ फसाद हम करबै छी
जँ अहूसँ मन नै भड़ैए हमरा तँ
जंगलक विनास परमाणु हथियार
आतंकवाद-उग्रवादसँ
दंगा-फसाद करबै छी
लहु-लहुआन कऽ
प्रकृतिक-सृष्टिकेँ
हम हँसैत रहै छी
तखनो मनुक्ख कऽ रहल अछि
विकासक बात
की चिन्हलौं अपने हम के छी
कलजुग।

उमर-अवस्था-मन

कतेक बर्खक बाद
मिलल सिनेहक पीर
जरमति वैह अछि
नोरक संग अधिर
शाश्वत पिड़ा बूझि मन
समस्याक धनधोर बादलमे
चमकैत बिजलीमे
भेटल आइ प्रेमक तरंग
देखि कऽ ठमकल हमर माथ
सभ दिन तकैत रहलौं अर्थक बाट
अन्हार जिनगीमे
भेल ज्ञानक विहान
तखनो हम पाछाँ रहि गेलौं
बहुत भऽ गेल देर
समैक सदुपयोग नै कए सकलौं
छुटकारा लेल कऽ रहल छी
लाखो जतन
अंत समैमे
अर्थी सजाओल जा रहल अछि हमर
सभ छोड़ि जा रहल छी
खाली हाथे बनि फकिर।
संग छोड़ि रहल अछि
उमर-अवस्था-मन आ शरीर।

पियासल

सोन सन सुरतिकेँ
किछु नै अछि मोल
बाजू हे मैथिल
अपन मातृभाषामे
मधु सन मीठ बोल
राजा विदेहक ई गाम
सिनेहक पियासल ई मिथिला
जगत-जननी
माता सीताक जन्मभूमि
एतए माटिक कण-कणमे
अछि भरल विद्वता
स्वर्ग सन सुशोभित
देवलोक सन सुन्दर
अछि हमर मिथिला ओहन महान
जतए सुग्गो पढ़ैत छल
वेद-पुराण
मुदा यौ श्रीमान्
शिशा पिघला कानमे
ढारल जाइत छल
सेहो सुनैत छी
यौ श्रीमान्।
अन्न-धन भरल अछि
पोर-पोरमे
कुहकैत चिड़ै-चुनमुन
करैए किलोल
सोना सन सुरतिक
अछि नै कोनो मोल।

हत्या

थानापर पड़ल
अछि एगो लाश
थाना पुलिस कऽ रहल अछि
हत्याराकेँ पकरैक कोशिश
हत्याक कारणक
छान-बिन रहस्यक तलाश
शंकामे पकराएल
एक गोट व्यक्ति
जेकरा नै अछि
डरसँ होसो हवास
पुलिस करकि कऽ बाजल
नै कर तूँ बकवास
सत-सत बाज
के करलकै एकर हत्या
संग-संग रहै छेलही तूँ
दोस छलौ तोहर खास
कनै छै एकर
बीबी-बच्चा, माए-बाप
किअए करलीही
एकर जिनगी नाश।

फाटल भविष्य

समय कही रहल अछि
जागू-जागू
अवाज उठाउ
अप्पन हक लेल
एखन नै जागब तँ
परिस्थितिक परिणाम
भोगए परत
अहीक लेल लड़ए पड़त
खुन खुनामे
भजाएब एक दिन
अबएबला समएमे
के देखलकै अबैबला ओ दिन
जीतब तब वाह-वाह
जँ हारब तँ
परिस्थितिक परिणाम
भोगए पड़त अहींसँ कहै छी
सिर उठा कऽ जिबू
फाटल-भविश्य अप्पन
अपनेसँ सिबू
अखनो बुझइये ओ अपनेकेँ नवतुनिया
ओकरा संगे आँखिसँ आँखि
मिला कऽ रहू।

गेलहे घर छी

जौं अखार महिनामे
बुढ़ बरद, पजरामे दरद
पंजाबमे मरद अछि तँ समझू
हे गेलहे घर छी।
घर लग बलान
चोर संग मिलान
धनक शान अछि तँ समझू
हे गेलहे घर छी।
दूध लग बिलाइ
बच्चा लग सलाइ
अप्पन काज करैमे केलौं ढिलाइ तँ समझू
हे गेलहे घर छी।
डराइबर अनारी
एड्स बेमारी
दोकानमे खाइ छी उधारी तँ समझू
हे गेहले घर छी।
मैट्रीकमे फेल
जवानीमे जेल
बुढ़ाढीमे केलौं मेल तँ समझू
हे गेलहे घर छी।
चाहक चुस्की
लड़कीक मुस्की
दारू आ विस्कीक फेरीमे परलूँ तँ समझू
हे गेलहे घर छी।
बन्दूकक नाल

माछक चाल
सैरक गाल देखि कऽ कुदब तँ समझू
हे गेलहे घर छी।
भैयारीमे झगरा
घरवाली अछि तगरा
ससूर अछि लबरा तँ समझू
हे गेलहे घर छी।
बाप कंजूस
कोठीमे लागल मुस
नोकरीमे देलौं घूस तँ समझू
हे गेलहे घर छी।
कपड़ापर पड़ल मोबिल
कपारमे फरल ढील
टॉगमे गरल किल तँ समझू
हे गेलहे घर छी।

पलटन लाल

केहेन-केहेन मोछबला दरोगा ऐ थानासँ गेले
तँ आब एले पलटन लाल
ओजन छै हिनकर एकसौ किलो
चलै छै केना मोकनी हाथीक चालि
केहेन-केहेन..... ।
क्षेत्रमे दिने देखार भऽ रहल छै चोरी, डकैती,
अपहरण, हत्या
खाली ओ कमबैमे लागल छै माल
केहेन-केहेन.... ।
घूस लेनाइ जेना छै हिनकर पुस्तैनी आदति
एतएक जनता हिनकासँ छै तंगहाल
हम-अहाँ कि करबै आब तँ बिहारमे ठेकेपर
अफसर सभ भऽ रहल छै बहाल
केहेन-केहेन मोछ..... ।

बाढ़ि

गड़-गड़ चुबि
रहल छल छप्पड़
काइट रहल छल
माछी मच्छर
राइत भरिमे डूमि गेल
डबरा आ डगर
एक्केबेर आएल एहेन बाढ़ि
छन भरिमे देलक सभ किछु उजाड़ि
नेना-भुटुका सभ छल ठिठुड़ैत
पछबा हबा बहि रहल छल गुफड़ैत
भगवान किएक मारलक एहेन मारि
हाथ जोड़ि करै छी विनती
आब नै आनब एहेन बाढ़ि।

डेग डेगपर खतरा

लोक लोककेँ
जानसँ मारै छै
दानव सन
करै छै बेबहार
कियो भऽ गेल बइमान
कियो चोर
कियो दहेज लोभी
कियो डाकू खॅखार
विश्वास केकरापर
के करत?
अपनो अप्पनकेँ
लऽ लइ छै जान
मनुख-मनुखकेँ
नै चीन्हि रहलैए
मनुख चरित्र
जानवर सन भऽ रहलैए
मानवता आब औना रहलैए
डेगपर खतरा अछि
ओना बुझा रहलैए
देखू आजुक मनुख
बदलाव देखि गिद्धो कोना सरमा रहलैए।

कपुत

समए संग-संग
सभ किछु बदैल गेल
लगैए कलयूगक
चपेटमे सभ किछु परि गेल
माता-पिता भगवानसँ
बढ़ि कऽ होइए तकरो लोग बिसरि गेल
वृद्धावस्थामे अखन अकेले परि गेलैं
की कहूँ रहि-रहि देह सिहरैए
थर-थर कपैए हाथ
कोना कऽ केकरो लग बाजब
पुत भऽ गेल कपुत
कऽ देने अछि कात
भेटल अछि पुरान ओछनि
आ टूटल खाट
पुसक जारमे
कियो हमरो लग आबए
कखैनसँ तकै छी बाट।

आशा

मैथिल छी हम
मैथिली हमर भाषा यौ
जाइत-पैतक दोग रचि
किअए देखै छी
अपने सभ तमासा यौ
अही सन सोनित
बहैए हमरो देहमे
हमरो अछि किछु अभिलाषा यौ
जन्म लेने छी
अपने सभ जकाँ हमहूँ अही धरतीपर
हमरो मनमे अछि किछु आशा यौ
रोज सुति-उठि
करै छी हम
पावन भूमि
मिथिलाक उन्नतिक आशा यौ
मैथिल छी हम
मैथिली हमर भाषा यौ।

गामक चौअनियाँ

ए.पी.एल
बी.पी.एल
भऽ गेल करिया झुमर
गामक चौअनियाँ नेता सभ
केना खेलाइए उलटा खेल
केकरो चारि गोटेमे
चौदह कूपन
केकरो डिबियोमे नै तेल
कहैए गामक सभ्य लोक
सोझ ऑंगरीसँ
घी निकालब बड़ अछि झमेल
गामक लफंगा सभ
नेतागिरीक धमकी दऽ
लऽ जाइए जरकिन भरि तेल
डिलर लबैए अनाज
बारह महिना बाइस किलो
बाँकीकेँ कऽ दइए
बिलेकसँ तरपेसकी सेल
मुँहदुबरा सभ कतौ पास
तँ कतौ भऽ जाइए फेल
ए.पी.एल
बी.पी.एल
भऽ गेल करिया झुमर
गामक चौअनियाँ नेता
केना खेलैए उलटा खेल।

नेताजी नमस्कार

नेताजी नमस्कार
अपनेकेँ ई जनता सभ
जितेने अछि
पहिले चरबै छलौं
अहाँ गाए-महिंस
मंत्रीक कुरसीपर बैसेने अछि
कने करू विचार
नेताजी नमस्कार
ऐठामक गरीब सभ
दिल्ली-पंजाबमे कमा रहल अछि
कोइ बम्बइ तँ कोइ
कलकत्तामे बौआ रहल अछि
पढ़ल-लिखल बेरोजगार सबहक
सर्टिफिकेट दिवार खा रहल अछि
अपने किएक नै दइ छी रोजगार
कने करू विचार
नेताजी नमस्कार
अपने केना बुझब
मैट्रीकमे फेल छी
चोरी-डकैती-अपहरण-हत्याक
मामलामे जेल सेहो गेल छी
सभ किछुसँ छी रिटायर
खाली भोटक लेल करै छी मारि
कने करू विचार
नेताजी नमस्कार

अस्पताल भऽ भूतबंगला
रोडपर भऽ गेल खदहा
साले-साल अबैए बाढ़ि
विकासक रूपैया अपनेक चमचा
जाइए डकारि
अपने हेलीकॉपटरसँ
करै छी शैर
कने करू विचार
नेताजी नमस्कार
आबो विकासक बात करू
दोसरपर दोख थोपि
गारल मुर्दा नै उखारू
कागजी काम करलासँ
नै सुधरत बिहार
कने करू विचार
नेताजी नमस्कार।

सतहिया

सावन मास छल
राति रहै अनहरिया
बर्खा रूकैक
नाओं नै लैत छल
लधने छल सतहिया
ढौसाबेंग
किड़ी-मकौड़ी
करै छल सोर
भुरुकुबा कनी उगल छल
चुह-चुहिया
करै छल किलोल
फरिच्छ होएबामे देरी
मुदा छल पहिल भोर
एक्के बेर
टुटल बड़का बान्ह
गाम घर बनि गेल
कोसी आ बलान
पानिमे रहि-रहि उठै छल ऊफान
तब मनमे सोचलौं
हे भगवान केना
बँचत आब लोकक जान
माथपर हाथ दऽ सभ अछि कनैत

कतएसँ आनब

मरूआ-धान

भुखसँ निकलैए जान

कएल खेती

सभ गलि गेल

नै रहल कोनो नामो-निशान।

दलिदर

साहित्यक दलिदर
कतेक जुलुम करैए हमरापर
कियो तँ बाजू
कियो हमरा दिससँ अवाज उठाउ
खिंच देने अछि
लक्ष्मण रेखा बाँटि कऽ एक भागमे
बन्न कऽ देने अछि सभ रस्ता द्वार
हरपने अछि ओ हमर हक
जातिक नाओंपर करैए तिरस्कार
दुख: हमर ओ केना केना बुझत
केकरासँ कही अपन दिलक हाल
वर्षोसँ देखि रहल छी हिनक
यएह रंगताल
मंगै नै छी किछु हम हिनकासँ हम
बस चाही हमर अधिकार
साहित्यक दलिदर
कतेक जुलुम करैए हमरापर।

पोसिया

हम खोजै छी
अहींकेँ
यौ कनी अगारी आउ
लऽ कऽ उ मोटरी
जे लेने छी अहाँ पोसिया
बराबरि कऽ
जइमे बन्हने छी
हमर अधिकार
हमरा सोझामे खोलू
आबो सभ गिरह
ओझरा कऽ नै राखू
माइक बोली मैथिली भाषा
आबो नै कसू
अप्पन सोल्हनी बला रसा
आब नै सुनब हम
अपनेक बनल-बनाएल खिस्सा
दूधक दाँत टूटि गेल गेल अछि
ज्ञानक इजोतसँ आँखि
हमर खुलि गेल अछि
दऽ दिअ हमर हिस्सा
हम खोजै छी
अहींकेँ
यौ कनी अगारी आउ
लऽ कऽ उ मोटरी
जे लेने छी अहाँ पोसिया।

मैना

एलै एहेन अन्हर-बिहाड़ि
जइ डारिपर छलै मैनाक खोंता
वएह टूटि गेलै डारि
डारिक संगे खोंता गिरलै
खोंतामे रहैत बच्चा संग जोड़ो मरलै
पलक झपकिते
मैनाक जिनगी देलकै उजाड़ि
एलै एहेन अन्हार-बिहाड़ि
जइ डारिपर छलै मैनाक खोंता
वएह टूटि गेलै डारि
कोनमे दुबकल कनै छै मैना
विरहक दर्द अखन जनै छै मैना
उजरल खोंता देखि
नोर बहा रहल छै मैना
बितल दिन यादि कऽ
सिहरै छै मैना
एलै एहेन अन्हर-बिहाड़ि
जइ डारिपर छलै मैनाक खोंता
वएह टूटि गेलै डारि
दुखक पहाड़ ओकरेपर खसलै
विपतिक साया ओकरेपर पड़लै
आँखिमे नोर लेने मैना एक दिन
जगल छोड़ा उड़ि गेलै मैना
एलै एहेन अन्हर-बिहाड़ि
जइ डारिपर छलै मैनाक खोंता
वएह टुटलै डारि।

माछक तीमन

हाल छै बेहाल खेती बारीक छै ताल
छी अखन खेतमे
सौंसे देह लगल अछि थाल
धिया-पुता सभ
कदबामे कुदै छै
देखि कऽ माछक चाल
कोइ पकड़ै छै इचना
कोइ पकड़ै छै पोठी
बिचमे बगुला छै मालो-माल
ओमहर बिआ जे उखारै छै
महिला जन
कोइ करै छै, सासु-ननदिक निना-बिना
कोइ गबै छै सोहर-समदौन
छमकी-लबकी भौजीकेँ
केना करै छै लुसुर-फुसुर मन
कहै छै हमरा ऐ बौआ
पकड़ू ने अहूँ
कऽ देब मरूआक रोटी
माछक तीमन
एगो जे दँतटुट्टी बुढ़िया छै
ओहो कहाँ छै कम
खाली तमसाइ छै कहै छै
साँझे सबहक घरमे हेतै गम-गम-गम।

कवाड़ी

जहियासँ केलौं शादी
गमा देलौं सभ अजादी
की करब
करै छी आब खेती-बारी
काम नै चलत आब
करि कऽ नौकरी सरकारी
वेतन भेटैए दस महिनापर
कतएसँ आनब
घरमे नुन-हरदी
कतएसँ आनब साग-सब्जी-तरकारी
एक दिस घरमे बैसल मैडम
जुति फरमबैए
ऑडर करैए जानि दिअ
लेकमीक लिपिस्टिक
ठोररंगा-नहरंगा
पाउण्ड्स पोडर
फिल्मी हिरोइन सन साड़ी
सुनि पछताइ छी आब
जेबमे एक रूपैया नइए
माथ भऽ जाइए भारी
नीक छल कुमार छलौं
आब भऽ गेलौं कवाड़ी
शादी नहिये करितौं
वा रहितौं बाल-ब्रह्मचारी
कि करू आब किछु नै फुराइए

नै किछु करने रहलो ने जाइए
मैडमक संग गृह युद्ध लरी
वा बनी पति पतित-पत्नी पुजारी
दोसर गुजारा कोनो नै
भऽ गेल अछि लचारी
दहेज लेने छलौं
दु-तीन लाख
आब पड़ैए भारी
भानस-भात केकरा कहैए
काम बेरमे कनियाँकेँ
अंगनामे लगि जाइए दीक
कहै छथि- गोइठा-जरना नै गैस चाही
नै तँ बढ़ि जाएत बेमारी
करै छी आब खेतीबारी
काम नै चलत आब
करि कऽ नोकरी सरकारी
दुख: हमर कहाँ कियो बुझैए
जेहने बिडिओ छै
तेहने सिओ, तेहने थाना प्रभारी।

बरखाक मौसम

बरखाक मौसम
आबि गेल
नदि-नाला-पोखरि-झाँखरि
पानिसँ भरि गेल
कअए जगह कोसी-कमला
भुतही-बलान नदिमे
भऽ रहल अछि कटान
फेरि नै कटए कुसहा
बाघ सन बाढ़िक घटना
तइ लेल सभ कियो
भऽ जाउ सावधान
हर जगह हर ठाम
कमजोर भऽ रहल छहर-बान्ह
नदिक कातमे जौं अछि
अपनेक गाम
सभ कियो ऐ बातपर दियौ धियान
प्रशासनकेँ सूचित करू
अपनो बचू
दोसरोकेँ बचाउ
एक देश भक्त सन करू काम
गाममे नाहक करू इतजाम।
बरखाक मौसम
आबि गेल।

मिथिलाक नारी

गामक परिधान
पहीर हे मिथिलाक नारी
पुजी जेष्ठ सभकेँ
करी आदर-सम्मान
गोबरसँ आंगन नीप
साफ-सुथरा करी
साँझ-बिहान
मन हर्षित रहैए
तुलसी आंगनमे हलसैत रहैए
करी सहयोग एक-दोसरकेँ
पढ़ि रोज स्मरण करी गीता-पुराण
करी जौं किछु सेवन
दही-चुड़ासँ कहाँ किछु अछि निमन
तिलकोरक तरुआ
पान और मखान
सदा अपनाबी मैथिलक
ठाठ-बाठ
सुशोभित रखी मिथिलाक नाम
गामक परिधान
पहीर हे मिथिलाक नारी
पुजी जेष्ठ सभकेँ
करी आदर-सम्मान।

रगड़ा

सुकदेवा आ चिचोरबावालीमे
छल रगड़ा
एक दिन भेल मारा-पिटी
झगड़ा
बात अतेक बढ़ि गेल
केस-फौदारीपर चलि गेल
गाम-समाजक लोक दुनू गोटेकेँ केलक मना
तैयो चिचोरबावाली चलि गेल थाना
एक दिस सुकदेवा
डरसँ सुखि भऽ गेल परास
हिनको किछु नै फुराएल
ईहो चलि देलक केस करैले
फुलपरास,
जखन टपल भुतही-बलानक पार
तखने छूटल हिनका गरमीक बोखार
मोनमे आएल हिनका होश-हवाश
सोचलनि जे जाएब जखन थाना
तँ लागि जाएत फेरीक फाना
उल्टे घुमि कऽ चलि आएल घर
सिहरै छल तरे-तर
कखनो अंगना तँ कखनो जाइ छल गामपर
ओमहर चिचोरबावालीकेँ
लोक सनकाबै छल
सुकदेवाक करबा दहक भीतर
एहनो कहूँ भेल

पुरुख हाथ उठेलक जनानीपर
इ सभ सुनि कऽ चिचोरबावाली
फुलि कऽ भऽ गेल तुम्मा
झटसन आवेदन थानामे कऽ देलक जमा
तब हिनक मोन भेल संच हमरा
दरोगा कहलखिन ऐ चौकीदारकेँ
अछि वनगामा पंचायतक सरपंच
हम कहलौं सर सुनू
सरपंच अछि साहुजी नूनू
गामपर दू-चारि दिन खूब भेल हंगामा
आवेदन घूमि कऽ चलि आएल पंचायत भवन वनगामा
दुनू तरफसँ भेल पंचैती
सुखदेबापर भेल जुर्माना
तब कहलक सुकदेबा हम छी गरीव-दुखिया
अपने स्वास्थ्य विभागसँ अपजल छी
यौ दयानंदजी मुखिया
अपने गछि लियौ जुर्माना
मुखिया कहल- हाय रे जमाना, हाइ रे जमाना।

नेता

नेता सभ भऽ गेल पियक्कर
चमचा चौअनिया
भऽ गेल एतए ठिकेदार
देखियो केना चलतै
ई सुशासनक सरकार
क्षेत्रमे विकासक काम नै
ठीकसँ भऽ रहल अछि
बिल पास होइए
करोड़क-करोड़
हजार-हजार
देखियो कोन बन्दर बाटमे
आइ पड़ल अछि बिहार
ई अछि एतुक्का नेता जीक कमाल
कतौ सड़कपर कादो
तँ कतौ सड़कपर थाल
जोरसँ करू हिनकर जयकार
घूसखोर नेताजी जिन्दावाद-जिन्दावाद
जनता भेल अछि बेहाल
विकासक रूपैया खा कऽ नेता
अफसर भेल अछि मालो-माल
सगरे पसरल अछि भष्टाचार
अनभिज्ञ भेल अछि सरकार
ई अछि एतुक्का नेता जीक कमाल
वर-बर बिगड़ल जाइए बिहारक हाल

केना चलतै सुशासनक सरकार
जितलाक बाद क्षेत्र आ
जनताकेँ भूलि जाइए
मंत्री बनलाक बाद रूपैयापर तुलि जाइए
इमान-धर्म हिनक चरित्र घटि जाइए
केना कएल जाए ऐठामक नेतापर बिसवास
खाली करैए पत्थरपर शिलान्यास
कहैए आपनेकेँ जनताक पालनहार
नेता सभ भऽ गेल पियकर
चमचा चौअनिया
भऽ गेल ठिकेदार
देखियो केना चलतै
ई सुशासनक सरकार।

मनक बिसवास

भेल अन्हार
लगल जेना
सभ निपत्ता
बहल पछबा
चलल हवा
टुटल पत्ता
हृदए व्याकुल
मिलनक आश
दौड़ैत-दौड़ैत
भेटल नै कतौ ठौर
कखनो सफलता
कखनो असफलताक डर
दृढ़ संकल्प अटुट बिसवास
जिवनमे आश
लेने मनमे बिसवास
देखि रहल छी
सुगम पथ
उत्साहक रथ
एक दिन जरूर पुरा होएत
मनक मनोरथ
ऐ लेल
पीबए परैए कोनो घाटक पानि
किएक नै उपछए पड़ए खत्ता
भेल अन्हार
लगल जेना
सभ निपत्ता।

केहेन विधना

लिखलनि विधाता
कलजुगमे मेटा रहल मानवता
अप्पन-अप्पन हितक लेल
मारि कऽ रहल अछि
परोपकारक नै अता-पता
केहेन विधना
लिखलनि विधाता
आब किअए भऽ रहल अछि
मनुख चरित्र निप्पता
सेवासँ सभ निरवित
माता-पिता
केहेन विधना
लिखलनि विधाता
नित दिन मनुख-मनुख करैए हत्या
केकरा दोख दी
जेहने गुरु तेहने चटिया
असली-नकलीमे अन्तर की
माटिक मुरुत बनल अछि
भाग्य विधाता।

अपनेकैँ की कही

समाजक अइना
कही कि फोटोग्राफर
प्रोफेसर कही कि पत्रकार
कवि कही कि रचनाकार
अफसर कही कि बेरोजगार
अभिभावक कही कि दोकानदार
पढ़ै छी रोज अपनेक
लिखल समाचार
खुलि जाइए हमर
बुधिक सभ द्वार
टक-टकी लगेने रहै छी पढ़बाक लेल
हिन्दुस्तानक समाचार
सबहक मनकैँ भावैए अपनेक बेवहार
डरे अछि घुसखोर
कमी भेल भ्रष्टाचार
सदिखन अहिना चुमी अहाँ
सफलताक शिखर-पहाड़
कोन नाम केर सम्बोधन करी
अपनेक लेल
अचरजमे पड़ल अछि कवि चौकीदार।

फुसि-फट्टका

हे आब बुझिऔ
बड़ दम खम देखबै छलए
चौकीदार-दफेदारकेँ
आबि रहल अछि ओ सभ कियो
आबए दिऔ नितिश कुमारकेँ
घूस लइए तरे-तर
निर्दोशकेँ भितर
दोषीकेँ बहार
कनियाकेँ लऽ कऽ नेपाल
तँ कहियो घरपर
खाली फूसि फट्टका
हे आब बुझिऔ
आबि रहल अछि ओ सभ कियो
डियूटी कम-सम खाली छुट्टी
मोन जे गरमाएत ओनीहारकेँ
तँ लगा देत पुलिस लाइनमे डियूटी
कि बुझै छिऐ
मुख्तार-मुंशी, दुनू पार्टीसँ
करैए कनफुसकी
थानाकेँ छोड़ि दै छिऐ
जे.पी बाबू आर.आर सिंहपर
हे आब बुझियो।

हकिकत

आँखि बंन्न
डिब्बा गायब
अतै हकिकत अछि
जोर चलैए
लबड़ा-चुच्चाक
जे मंगैए दऽ दियौ
नै देब तँ जानपर मोशिबत अछि
लोक बनल अछि बहुरुपिया
रंग भेषसँ
केकरा चिन्हब मोसकिल अछि
एतए मनुखक रूपमे
शैतान छिपल अछि
के की छी नै किनको
माथपर लिखल रहैए
आइ मानवताकेँ
कऽ रहल अछि कलंकित
जे अप्पन स्वार्थ भावमे
डुमल अछि
मनुख तन पाबि कऽ
प्रभूक भजन छोड़ि कऽ
अहित काममे लागल अछि
आँखि बन्न
डिब्बा गायब
एतेक हकिकत अछि।

पावन भूमि

बिहारक पावन भूमिमे
सदा बहैत अछि
गंगा, कोसी कमला बलान
एकर निर्मल जलसँ
निखरल अछि
एतुक्का खेत ओ खरिहान
विक्रमशिला विश्वविद्यालय
बुद्ध स्पुत मिथिला पेटिंग
अतितक अछि स्वाभिमान
महा कवि विद्यापति आर्यभट्ट, आयाची
मंडन जतए छथि महान
एतए अतिथि पुजल जाइत अछि
संतकेँ होइत अछि सत्कार
स्वागतमे भेटैए पान-मखान
भाषा संस्कृति सदिखन सभकेँ
मनमोहने अछि
कला संस्कृतिकेँ अलग-पहिचान
एतए श्रीराम आएल छथि
बनि कऽ मेहमान
एखन हम कहाँ बिसरलौं
जे कहि गेल महाविर बुद्ध भगवान
अपन माटि पानिसँ जुड़ल छी हम
अल्लाकेँ जपै छी
पुजै छी श्री राम
छठि, ईद मनबै छी एक संग मिलि कऽ

हिन्दू और मुसलमान
देश हमर हिन्दुस्तान
बिहारक पावन भूमिपर
सदा बहैत अछि
गंगा कोसी कमला बलान।

एना नै कर

बौआ रौ
एना नै कर
सुन हमर बात
किदु सोची जखन
मन रहैए शितल
सुख-दुख राखी कऽ मोनमे
बिसरि कऽ सभ
बात बितल
बौआ रौ
एना नै कर
सुन हमर बात
अबेर तक नै रह सूतल रह
भोरे उठि कऽ कर
माए-बाबुकेँ प्रणाम
तकरबाद धुम-फिर टहल
मन रहतौ चंचल
बौआ रौ
एना नै कर
सुन हमर बात
अपनासँ श्रेष्ठसँ किछु सिखी
नै बात करी रटल
खेली-कुदी
पढ़ी-लिखी
करी सबहक कहल
बौआ रौ
एना नै कर
सुन हमर बात।

भुतहा मोड़

नित दिन होइए
नव-नव घटना
साँझ ओ भोर
कोइ होइए घाइल
तँ कोइ होइए चोटील
थोड़बो थोड़
मरि गेलै बुचना तँ
मरि गेलै सजन-धजल बर
उजरि गेलै केकरो मांगक सिनुर
उजरि गेलै केकरो घर
बिहुँसै छै नव कन्याँ
कनै छै माए-बाबू-भाए-बहिन
बहबै छै दहो-बहो नोर
चरचामे बनल छै
हृदए विदारक ई घटना
चहू ओर
मौतक चौराहा बनल अछि
एन.एच भुतहा मोड़।

हमरो लेने चलू

हमरो कहि दिअ यौ
अपने कतए जा रहल छी
संग हमरो लेने चलू
हमहूँ जाए चाहै छी अपनेक संग
अइठाम ऐ दुनियाँमे
मोन हमरो औना गेल
जेना लागैए हम भऽ गेलौं तंग
सभ ई अपनेक बनाओल ई विधना अछि
के अप्पन के पराया सभ अपने छी
हम आइ बूझि गेलौं सभ किछु
भऽ गेल मोह माया हमर भंग
अपनेक अलौकिक छी
अन्तर्यामी छी सभमे छी अंनत रंग
खुलि गेल हमर आँखिक भरम
दुनियाँ ई एकटा नाटक अछि
केकरो जीवन तँ केकरो मरण
ई पार्ट तँ अहिना चलैए
हमरो कहि दिअ यौ
अपने कतए जा रहल छी
संग हमरो लेने चलू।

अथाह

पलक झपकैत हम
सपनाक दुनियाँमे
बटोही सन हम हेरा गेलौं
जहू दऽ कऽ बाट नै छल
तहू दऽ कऽ हम चलि देलौं
डेग-डेगपर होइत रहल
लोक संगे नोक-झोक
जाइत रहलौं हम बेरोक-टोक
उलटि कऽ नै देखलौं
के भेल खुश के भेल नाराज
बिनु परवाह केने हम चलैत रहलौं
ततेक दूर हम चलि गेलौं
हमरो थाह नै लागल
निनक नदीक धारामे
सपनाक नाहपर सवार
हम चलैत रहलौं
अविरल मोनमे विभिन्न तरहक
विचारक प्रवाह अबैत रहल
डगमगाए लगलूँ बिच अथाहमे
लोभ-क्रोध नै छल हमरा चाहमे
पलक झपकैत हम
सपनाक दुनियाँमे
बटोही सन हम हेरा गेलौं।

गारल मुर्दा

श्मशानमे
गारल मुर्दा छटपटा रहल अछि
भितरसँ अंगुरी
अप्पन उठा रहल अछि
कहरैत श्वरमे बाजल
आजुक मनुखक
अस्तित्व कि अछि
मानवताक गुण
विश्वास परम्परा सभ किछु बिसरि गेल अछि
आइ मनुखक दुश्मन मनुख बनल अछि
सभ लोभ-क्रोध मोह-माया केर जालमे
ओझरा गेल अछि
गारल मुर्दाक प्रश्नसँ हमर हृदए कापि गेलि
एकर उत्तर हमरा लग नै छल
अनायास हमरो मुँहसँ निकलि गेल
आजुक मनुखक अस्तत्व कि रहि गेल।

हाल-चाल

बड़ बराब छै हाल
ऐठामक नेता छै माला-माल
रोड-सड़ककेँ देखियौ तँ
कदबा गजार सन छै थाल
ऐ मुँहझौसा नेता सभकेँ
कोइ नै किछु कहै छै
भरि बरसात
साँप-किड़ाक डरसँ
साँझे घर घड़ै छै
एक-दोसरमे एकता नै छै
यएह छिऐ काल
बड़का नेता-मंत्री छिऐ तँ एकर मतलब की
कतेक बेलना बेलए पड़लै ओकरा
केना कऽ गलतै राजनीतिक दालि
मासुम जनताक संगे
चलै छै चतुर सिआरक चालि
आबए दहक समए हौ नेता
भिजल बिलाइ सन हेतह हाल
अखन तँ खाली पाइये सुझाइ छै
सगरे पिटै छै विकासक डंका
मुदा घरक आगाँमे
साँझे बेंग कोकिआइ छै

करै छै कोनो काज जेना कछुआक चालि
बड़ खराप छै हाल
ऐठामक नेता छै माला-माल
रोड-सड़ककेँ देखियौ
कदबा गजार सन छै थाल
जहिना इण्डिया तहिना नेपाल।

पथ ई केहेन

गुज-गुज अनहरियामे
केना हेरा गेल हमर मोन
आब सम्हारब केना
अप्पन जीवन
नै पाछाँ छोड़ैए
मद्धपान दारू-शराब
नै पाछाँ छोड़ैए संगतक लक्षण
जेम्हर जाइ छी सगरे ओनाइ छी
पथ ई केहेन
जइपर चलैत खूद पछताइ छी
आइ मरनासन भऽ गेल हमर अवस्था
कष्टक मारल छटपटाइ छी
केहेन कठिन ई रस्ता
अपने प्रश्नसँ हम ओझराइ छी
दोसरकेँ संदेश कि देब
ने जिऐ छी आ ने मरै छी
करनीक फल भोगि रहल छी
अपने सभ करू विचार
नशामुक्त बनौ देश ओ संसार।

गृहस्थ सबहक हाल

सभ किसान
भेल अछि परेशान
समएपर बरखा नै भऽ रहल अछि
केना रोपाएल धान
बिति गेल श्रावणक मास
खेतमे गिराएल बिआ
सुखि कऽ भऽ रहल अछि नाश।

जोतल खेतमे गरदा-धूल उड़ि रहल अछि
किसान सभकेँ ऐबेर
खेतीसँ आस टूटि रहल अछि
अखन धरि नै भेल पानि
सभ गिरहत मेघ दिस देखि रहल अछि
इंद्र भगवान किएक भऽ गेल नराज नै जानि।

सभ किसान भेल अछि परेसान
समैपर बर्खा नै भऽ रहल अछि
केना रोपाएत धान।

पछिला साल बाढ़िमे नाश भऽ गेल धान
हम किसान खेतीपर निर्भर छी
ऐबेर सुखार भऽ गेल किसानक जा रहल अछि जान
सभ किसान भेल अछि परेसान
समैपर बर्खा नै भऽ रहल अछि
केना रोपाएत धान।

मिथिला महान

टाटपर
लतरल तिलकोर पोखरिमे मखान
अखार मासमे
झूमि-झूमि कऽ किसान रोपैए धान
जगमे सभसँ सुन्दर अछि हमर मिथिला धाम
भाषा आ संस्कृति देखि लोभाएल श्रीराम
बारीमे भेटैए पान
घर-घरमे होइए
चूड़ा-दहीक जर-जलपान
मैथिल मिथिला महान
हरक पाछाँ बगुला घुमैए
हरबाहा जोरसँ
बरदकेँ बाबू भैया कहि हँकैए
आरिपर बैसल गिरहतबा
खुशीसँ दइए मुस्कान।
हमर सभ सुन्दर मिथिला गाम
मैथिल मिथिला महान।

माता-बहिन सभ खेतमे गबैए सोहर-समदौन
घुमरैत मेघ देखि कविकेँ हर्षित होइए मोन
हरबाहा जलखैमे खाइए
मरुआ रोटीपर सुक्खल नून
बहैए पछबा हवा

पानि पड़ैए झम-झम
वर्षाक झटकसँ टुटैए आसमान
सभसँ सुन्दर हमर मैथिल मिथिला महान।

हेराएल

जिनगीक सफरमे
जिनगी जिनाइ
हम बिसरि गेलौं
कि हमर हेराएल
कि हमरा भेटल
संघर्षक रास्तामे
बाधासँ लड़नाइ
हम बिसरि गेलौं
सही रस्तामे छल
काँट भरल
पगडंडीसँ हम
निकलि गेलौं
चुकि गेल सभ ओ बात
सच कहनाइ हम
बिसरि गेलौं
मानव भऽ मानवकेँ
धर्म हम नै निभा सकलौं
जाइत धर्म ऊँच-नीचक
बंधनमे हम
जकरि गेलौं
अखन कमी महसुस होइए
ऐ सभ बातक
कि करब आब तँ जिनगी
अहिना गुजरि गेल
जिनगीक सफरमे
जिनगी जिनाइ
हम बिसरि गेलौं।

दुभर

मंहगाइक दानब
आसमान चढ़ि गेल
सभ भाड़
एतए गरीबपर पड़ि गेल
कियो भऽ गेल
अरबपत्ति कियो भऽ गेल खरबपत्ति
कतौ गरीब
कियो नून रोटी
लेल मरि गेल
चलैए ई शिलशिला
एतए अहिना जहिना तहिना
कियो सासनक गद्दीपर
बैस राज करैए
केकरो बेटा-बेटी
डाक्टरी तँ इंजिनियरिंग पढ़ैए
केकरो बेटा-बेटी
घरेलू नोकर बनि घरक काज करैए
रोज मेहनति
मजदुरी करि कऽ
जीवन बितबैए
गरीबक बेटा
हॉस्पीटलमे रूपैया बिनु
इलाजक खातिर मरि गेल
महगाइक दानव
आसमान चढ़ि गेल।

विडम्वना

कतेक लिखब
दलितक बेथा
सलहेश गामक संदेश
कतेक लिखब
समाजक विडम्वना
आँखिक नोर सुखि गेल
दर्द नै होइए कम
के बुझत कि अछि झूठ
कि अछि साँच
टकमे टिक जोरि रहैए
बुझैए अपनाकेँ बड़का
खुद ओ अछि भितरसँ कारी
दुश्मन बनल तड़का
बड़-बड़ करैए नाच
दलितक प्रगतिसँ
जलनक लगैए हिनका आँच
कतेक लिखब
दलितक बेथा
सलहेश गामक संदेश।

दियादी बॉट

अपनहि घरमे
हेराएल छी हम
भेटैए हिस्सा
बरोबरि कऽ मुदा बॉटमे
पछुआएल छी हम
लड़ए पड़त अखनो
दियादी बॉटक लेल
नै तँ करत आओर झेल
कऽ रहल अछि ओ
दिगभ्रमित हमरा
दलित अक्षोप कहि कऽ
करने अछि
एकात हमरा
ओही एकातसँ
चलि कर आएल छी हम
सहलौं सभ किछु
सलहेशक संतान रहितौं
जहिया तक चुप रहलौं हम
आइ आँखि
फारि कऽ देखि रहल अछि
ओ हमरा
जब अप्पन हिस्साक
बात कऽ रहल छी हम
अपनहि घरमे
हेराएल छी हम।

पुर्णिमा

पुर्णिमाक रातिमे
चाँद केर चुप चाप
घरतीपर
उतरैत देखलौं
घासपर गिरल
ओस केर बुन्नमे
अप्पन चेहरा देखि
चाँदकेँ खिलखिलाएल
हँसैत देखलौं
नव यौवन
कोमल हसीन सुरत
चाँदकेँ पुरा मुखड़ा देखलौं
घरतीपर प्रकृतिक सृष्टीक
मनमोहन दृश्य देखि
गाछ-वृक्षक संग
चाँदकेँ नचैत देखलौं
चाँद कहलक
किछु बात धीरेसँ बाजू
अप्पन रूप-रंग
घन-सम्पतिक भाओ नै तौलू
चाँदकेँ लोकक लेल
यएह संदेश लिखि कऽ
जाइत देखलौं
पुर्णिमाक रातिमे
चाँद केर चुप-चाप...।

रिश्ता

हँसैत-खेलैत
हमर जिनगी छलए
वसंत ॠतु जकाँ
जाइत छलिऐ अलग
मुदा दोस छलए पक्का
भेदभावो नै कोनो
जेना मालामे गाँथल
रंग-बिरंगक फूल जकाँ
हुनकर खुशीमे
हँसैत-छलौं
दुख:मे कनै छलौं
संग-संग
चलै छलौं
नदिक दुनू किनार जकाँ
दुनू गोटेमे
मित्रता छल
सुदामा और कृष्ण जकाँ
लोक देखि कऽ जड़ै छल
धधकल कुलाह जकाँ
दोस्तीमे जहर घोरि देलक
दूधमे खटाइ जकाँ
दुनू दोसकेँ अलग कऽ देलक
लोक अप्पन रास्ताक दिवार जकाँ
हँसैत खेलैत... ।

अज्ञानी

कम फुल किचरमे
फुलाइ छै जखन
संग दइ छै पानियो
आँखि मुनि कऽ
किएक बनल छी अज्ञानी यौ
छोट तँ लोक
कर्मसँ होइ छै
मुदा हमर किएक छै
आइ दुख: भरल कहानी यौ
देहसँ देह
केना छुबाइ छै
किएक नै चलैए
हमर छुअल पानि यौ
कोन जुलुमक सजा
हमरा दऽ रहल छी
किअए बुझै छी
हमरा अपमानी यौ
जिवन हमर केना
बितत‍ै भेद-भाव
ऊँच-निचक
भावना समाजक
मनसँ कहिया मिटेतै
केहेन अहाँ छी अज्ञानी यौ।

कनी देखू

हे बलान माता
कनी देखू
अहाँ हमर ओर
आँखिसँ सुखल नोर
भुखसँ सुखल ठोर
घरमे नै अछि
किछु बॉचल
सभ लऽ गेलैँ बाढ़िमे
दहा कऽ दक्षिण ओर
कनैत-कनैत
करेज फटैए
केना अहाँ देलौं हमरा
झकझोड़ि
दाना-दानाक लेल
बिलखै छी
बौआ रहल छी हम चारू ओर
विपत्तिक बादल
हमरा ऊपर लागल अछि घनघोर
रातिक नीन नै होइए
जागि कऽ होइए भोर
हे माता दया करू
नै बनु अहाँ निठोर
अनजानमे जौं
कोनो गलती भेल होएत हमरासँ

तँ माफ करब
हाथ जोड़ि लगै छी गोर
हे बलान माता
कनी देखू... ।

मास्टरक बहाली

देखियौ-देखियौ
भेड़िया-धसान सन भेल
एतए मास्टरक बहाली
कियो नै करैए
एकर रखवाली
स्कूलमे नैना-भुटुका
करैए हल्ला-गुल्ला
मास्टर साहेब दऽ रहल अछि ठहाका
पढ़ाइ-लिखाइ
के करबैए
देखियौ केना उठबैए
सरकारी टाका
अखार मासमे बारह बजे
दिन तक खेतमे
कदबा-गजार करैए सर
एक बजे स्कूल अबैए सर
खैनीमे लगबैए चोट
शिक्षाकेँ रखने अछि ताखपर
मंगनीमे उठबैए नोट
स्कूलमे मैडमोकेँ देखियो
ओहो कम नै छथि
लेक्मीक लिपिस्टक लगेने मैडम
बॉबकट केश पहरबैए
इतर छिट कऽ केना स्कूलकेँ गमकबैए

पर्ससँ निकाइल कऽ अइना
रहि-रहि मुँह निङहारैए
मोबाइलपर करैए हेल्लौ
समए केना बितबैए
देखियो-देखियो
सरकारी पैसा केना उठबैए
कहबी अछि, जेहने इमाम सहाब
तेहने ढोलकिया
विद्यार्थीक गार्जियन
भरि दिन धिया-पुतासँ
गाए-महींस चरबबैए
देखिये-देखियो
खिचरी खाइ बेरमे
स्कूल केना पठबैए।

फागुनमे

अइहो
वृजगोपाला
फागुनमे
खेलैले होली
हमरा संगे
तोरा लेल
संजौनी छी
मखन भड़ल थाड़ी
बाट जोहि रहल अछि
राधा-सखी केर संग
ई वसंतक ॠतु मधुमासक मौसम
फगुनी हवामे
हम उराएब रंग अबिर
अहाँ प्रेम
सुधा केर
रंग बरसैए
हमरा
रंग दिहो अप्पन रंगमे
हमर जिनगीक मनोरथ
पुरा कदिहो
श्यामा अहीबेर
होलीमे
अइहो
वृजगोपाला
फागुनमे।

श्यामल मोहे

खोजत हम तोरा
ताही लेल
हेरा गेल हमर
कृष्ण कन्हैया
बासुरी बजइया
सखी हे किछु
बाजत नै तोर
ओनाएल छी हम
मृगा कस्तुरी सन
खोजीह देहो
श्यामल मोहे
चित्तचोर
सखी हे किछु
बाजत नै तोर
वृन्दावन
यमुनातट
पनघटपर कदमुआ पेड़
सुना लगत
प्रेम लीला
करत आब के फेर
सखी हे किछु
बाजत नै तोर
बड़ा नटखट
छैल छबिला

चित्तमन प्रितम केर
केस अछि
घूंघराएल
मोर मकून्दल सरपे
सखी हे किछु
बाजत नै तोर।

जीतक झंडा

जरै जाउ
वतन केर दुश्मन
आगि सुनगाएल करू
जीत केर झंडा
फहराएल करू
मोनमे राखि कऽ उमंग
गीत देश भक्तिक
गाएल करू
हिमालय सन ऊँच
हृदए अछि हमर
प्रेमक फूल खिलाएल करू
अछि गाँधीक देश ई
गंगा-यमुना पावन नदि
दइए संगमक संदेश जतए
तिलक, टैगोर, अम्बेदकर जतए
विर भगत सिंह
चन्द्रशेखर, सुभाष वीर पुत्र जतए
भेटए संघर्षक कथा जतए
मातृभूमि अप्पन
भारत माता केर
गुण गाएल करू
जरै जाउ
वतनक दुश्मन
आगि सुनगाएल करू।

युवा

रहैए युवाकेँ
उमंग मोनमे
जौं
पहाड़सँ लड़ि लेब हम
संघर्षक जीवन
अहिना चलतै
जीवनक अंतिम
समैमे
किछु करि लेब हम
जोश जतए कम नै हुअए
युवा के तँ
परिस्थिति सात समुद्र
पार कऽ लेब हम
हमरा नै रोकू कियो
दलितक दरदकेँ
हर संभव कम कऽ लेब हम
लड़ए किएक ने पड़ए हमरा
अही दुश्मनक संग
दुश्मनक छाती चीर कऽ
देखा देब हम
बहुत सतेने अछि
हमरा समाजकेँ
भरि जीवन
बीच अखारामे
पटकि कऽ देखा देब हम

चुप नै रहू
सभ अप्पन हकक लड़ाइक लेल
आगू बढ़ू
रहैए युवाकेँ
उमंग मोनमे।

हम युवा

जाति-धर्म
मजहब केर नामपर
षडयंत्र रचैए कियो
हमर देशकेँ
भीतर आबि कऽ
आतंकवादक
गाछ रोपैए कियो
भारतवासी शेर छी
शेरकेँ मादमे
आबि कऽ जगबैए कियो
दुश्मनक थाह नै
ऐ बातक
हम युवा
हर मोड़पर ठार छी
अंत करैले
सदिखन ऐ दानवक लेल तैयार छी
हम छी गोली, हम छी बारूद
हमही खंजर तलवार छी
तिरंगाक तिनू रंग
तीर-कमान छी
जौं दोस्तीक लेल हाथ बढ़ाएब तँ
हमही फूलक माला
गला केर हार छी
संदेश दइ छी शान्ति केर

हमहीं महात्मा गाँधी, गौतम बुद्धक
अवतार छी
जौं कहियो एक बुन्न
सोनित गिरल ऐ धरतीपर
तँ हमहीं वीर भगत सिंह
चन्द्रशेखर आजाद छी
जाति-धर्म ओ मजहब केर नाओंपर।

पथिक

हम पथिक छी
जीवन केर
जीबि लिअ दिअ
निहस्वार्थ रूपसँ
मनुख बनि कऽ
दोख हमरा ऊपर
नै लागए कोनो
नै गलती हुअए फेर
हम पथिक छी
जीवन केर
मनुखक तन भेटल हमरा
मानव धर्म निभाएब
मानव सेवा करब
जीवन प्रयत्न
चंचल डगर
मोहनी मायाक बसमे
नै ओझराएब फेर
हम पथिक छी
जीवन केर
गाड़ि देलौं हम
मन जीतक झंडा
अपना मोनमे
अविरल समस्या
कठिन परीक्षा

किएक नै हुअए जीवनमे
पाछू उलटि कऽ
नै देखब फेर
हम पथिक छी
जीवन केर।

हमहूँ कनै छी

जहियासँ
हम अहाँकेँ नै
देखि रहल छी
साँझ-विहान
एक नोर कनै छी।
कतए चलि गेलैं
अहाँ छोड़ि कऽ हमरा
एतए असगर
आगूक दुनियाँ हम
अन्हारे देखै छी।
सभ पुछैए अहाँक बारेमे
कियो आह करैए हे भगवान
केना भऽ गेलै
नीक लोककेँ
कियो करैए अहाँक बराइ
कहू कतए चलि गेलौं अहाँ
हमरा छोड़ि कऽ आइ
हमहूँ कनै छी
बौओ कनैए
माइक आँखिसँ
सदिखन नोर झहरैए
जखन किछु
सोचै छी अहींक
यादि अबैए
जहियासँ
हम अहाँकेँ नै
देखि रहल छी।

एना किएक

अखनो चलै छै
समाजमे
टंगघिच्चा
टंगघिच्चीक खेल
ऊपरसँ नूनू बौआ
भितरे-भितर
कहैए बकलेल
बर्षोसँ देखि रहल छी
हर तरहसँ
दलितक उपेक्षा
कएल गेल
कहू किएक
मैथिली छी हम
मिथिलावासी छी
तइ लेल?
ऐ तरहक निअम
बनौनिहार अपने के
जौं हमरोमे
कमी खोजै छी तँ
अपनो समाजक चेहरा देखू
किएक नै
हुनको संग
अहिना कएल गेल
ऐ प्रश्नक जबाब दिअ
समाजक जाति-पातिक

नाओंपर बटनिहार अहाँकेँ
कहू दलितकेँ
हर तरहसँ उपेक्षित
किएक कएल गेल
काविल नै बुझू अपनाकेँ
अपने छी बकलेल
अखनो चलै छै
समाजमे
टंगघिच्चा
टंगघिच्चीक खेल।

जितिया

गे दैया
गितिया
माए गेल छौ
पोखरिमे नहाइले
पावनि छै जितिया
होइ छै बड़ भारी
तीन दिन धरि
सहल रहए पड़ै छै
कऽ ले घर-आंगना
साफ सुथरा
चूल्हि-चौका नीप पोति ले
देखैमे लगतौ नीमन
आइ बनबिहेँ
मरूआक रोटी
माछक तीमन
जितिया पावनि
सभ मिथलानी करै छै
बाल-बच्चा
घर-परिवारक
दुख: कलेश दूर होइ छै
बढ़ै छै उमेर
पोखरिमे घेराकेँ पातपर

खैर-तेल चढ़ै छै

खुश होइ छै देव पितर भगवान

भोरे सभ खाइ छै

आमक अमोट

चूड़ा-दही जर-जलपान

गे दइया गितिया।

डगर

जिनगीक
ओइ मोड़पर
हम बैसल छी
जतए देखै छी
हरेक तरहक लोकेँ
जे अलग-अलग
डगरपर चलैए
कियो ऊपर चढ़ि गेल
कियो बीच बाटमे
अँटकि गेल
कियो असफलताक डरसँ
पाछू रहि गेल
शाइद एकर
जिनगी कहैत छै
हम अखने धरि
असमंजसमे पड़ल छी
कि करू किछु नै फुराइए
तइ लेल एत्तै बैसल छी
बैसल रहब
पछुआ जाएब
हमरो आब एतएसँ
चलए पड़त
कोन डगर चली
केन दिशा चली

अप्पन शक्ती देखि
बाट पकड़ए पड़त
जिनगीक
ओइ मोड़पर।

रमल छी

रामक धूनमे
रमल छी हम
संतक सेवामे
जुटल छी हम
शांतिक संदेश
बाटैमे लागल छी हम
गाए रक्षा करैक
शपथ खेने छी हम
वेद पुराण
धर्म शास्त्र पढ़ि कऽ
अप्पन जीवनमे
उतारबाक कोशिशमे
लागल छी हम
नीज स्वार्थ त्यागी केर
लोकहित काममे
लागल छी हम
जइ बाटपर
चलल महात्मा गाँधी
महात्मा बुद्ध वएह
बाटपर चलल छी हम
राम केर धूनमे
रमल छी हम।

संत

नदिमे
भसिआएल मुर्दा
शांतचित्त भऽ कऽ
पानिपर पड़ल अछि
एकर नै नाओं अछि
नै कोनो पता
पानिक रेतक संगे
अनजान पथपर
चलल अछि
कतौ पानिक रेत
झकझोरइए तँ कतौ
झारीमे फसि कऽ
निकलैक प्रसास करैए
कतौ नदिक कछेरमे
टकरा कऽ चलैए
पानि धार संगे
उथल-पुथल होइए
रौद-बसात सहैए
उगैए तँ डुमैए
सफरक ऐकरा कोनो
ठेकान नै
बस पानिक संग चलैए
जहिना संत
भक्ति-भावमे डुमल रहैए
भक्ति मार्गपर चलैए
नदिमे
भसिआएल मुर्दा।

बन्हन

चुप धड़कन
किछु कहैत छी
ई केहेन अजब सन
टिस हमर दिलमे होइत अछि
जेना लगैए
दुख केर नदिसँ बाचि कऽ हम निकलल छी हम
खुशीसँ चिड़ै जकाँ
उड़ै लेल चाहै छी हम
मुदा पएरमे लागल अछि
ई बेरिया बन्हन
ओकरा खोलैले चाहै छी हम
एगो भूल भऽ गेल हमरासँ
ओ भूलकेँ भूलैमे
खुद अपनाकेँ भूलि गेल छी हम
आब हमर अपनो छाँह
दोसरकेँ लगैए आ खुदकेँ
खोजैले निकलल छी हम।

संघर्ष जारी रखब

समस्या और
बढ़ि गेल
सफर अधुरा रहि गेल
जीत केर हारि
गेलौं हम
हरेक कोशिश नाकाम भऽ गेल
तखनो अप्पन हौसला
नै हारने छी हम
हर डेंग संघर्ष जारी रखब
अनजान अनभिज्ञ
ई समए कतै
तक लजाइए हमरा
विरह केर भीरसँ
मुदा एकर डर नै अछि हमरा
लड़ैत रहब
अप्पन समाजक
अधिकारक लेल
लोग हमर काम देखि हँसैए हमरापर
मुदा हम तेकर फिकिर नै केने छी
एहेन जीनगी जिनाइसँ
कोन फाइदा जइमे
संघर्ष नै अछि
एतए सभ अप्पना-अप्पना लेल जिबैए
जीने तँ ओकरा
कहल जाइए जे

समाज कल्याणक
लेल जबैए
मरलाक बादो
सदिखन हुनकर
कृति जिवित रहैए
अहू ओ अही डगरपर
हमहूँ चलल छी।

भरदुतिया

आइ छिऐ सुकराती
गे मुनिया
दिआरी डिबियामे
कर तूँ तेल एम्हर आ रौ मंगला
हुका-बाती खेल
ई पावनि त्योहार छै
मेल मिलाप करैक
सभ संग कऽ ले मेल
प्रेमसँ रहैमे नै
होइ छै कोनो परेशानी
दीप जरा
हुका बाती खेल
केलह विहाने
दइयाक सासुर जहीये
भरदुतिया पावनि छै
न्योंत लिहैँ
देतौ हाथमे पान-सुपारी
आसिरवाद लिहैँ
देखिहैँ हुरा-हूरीक पहलमानी
फटाका-फुटुकीक नै कर झेल
आइ छिऐ सुकराती
गे मुनिया।

गबहा संक्राति

बड़ अनचित भेल
गृहस्त सबहक संग
ऐबेर
खेतीमे लगाउ खर्चा
मेहनति-मजदुरी
सभ बाढ़िक चपेटिमे
चलि गेल
पावनि-तिहारमे
सेहन्ता लगले
रहि गेल
आजुक दिन गवहासंक्राति अछि
अन्न-धनक घरमे
कमी देखै छी
केना कऽ अहीबेर
खेतक आड़िपर जा कऽ
कहब सेर-बरोबरि
उखैर सन बीट
समाठ सन सिस
जेम्हर देखै छी
खाली खेत खसल अछि
चारू दिस
प्रश्न कऽ रहल अछि हमरासँ
खेतक आड़ि आ मेर
खेतमे अगबे अछि
बालुक ढेर

केना कऽ गुजर चलत
उपजा कऽ कास-पटेर
बड़ अनचित भेल
गृहस्त सबहक संग
ऐबेर।

किमती भोट

हरेक पाँच बर्खपर
जन प्रतिनिधि हम सभ
चुनै छी
राज्य सभासँ
संसद धरि पहुँचाबै छी
अपन किमती भोट
दऽ कऽ जिताबै छी
चुनवक भार
हम जनता सभ उठाबै छी
मुदा जीत गेलाक बाद
ई नेता-मंत्री अपनाकेँ
बुझैए महान
कहू विकासशील देशक श्रेणीमे रहल
विकसित कहिया बनत हिन्दुस्तान
लोकतंत्रक हिनका
परबाह नै
देशक विकासक हिनका चाह नै
सामंतवादी सन
रखैए अपन सोच
मन-मोताबिक करैए विकासक
रूपैया केर खर्च
माननीय हिनका केना कही
एक नम्मरक अछि
ओ चापलूस बेइमान
कहू विकासशील देशक श्रेणीमे रहल

विकासित कहिया बनत हिन्दुस्तान
एक दिस विश्व बैंकसँ
कर्जा लऽ रहल अछि
दोसर दिस धांधलीक रूपैया
विदेशमे जमा कऽ रहल अछि
देशक कोन तरह
कमजोर बना रहल अछि
लोकतंत्रकेँ कऽ रहल अछि अपमान
कहू विकशित देशक श्रेणीमे रहल
विकसित कहिया बनत हिन्दुस्तान।

असली-नकली

मोन जौं चोन्हराएत
तखन की करबै
कलयुग अछि कछु भऽ सकैत अछि
असली-नकलीमे फर्क कोन
की झूठ की साँच तर्क कोन
सभ एक्के सिरहने पड़ल अछि
आइक परिस्थितिमे
नीक कही तखनो गेलौं
बेजाए कही तैयो गेलौं
तइ दुआरे हम मुँह लटकेने छी
कखन की भऽ जाएत
से कोनो ठीक नै
सभ किछु देखि कऽ आँखि मूनि लेब
मुदा चुप रहब सेहो ठीक नै
समए सभ दिन अहिना थोड़े रहतै
हरेक प्रश्नक जबाब जरूर भेटतै
मौन जौं चोन्हराएत
तखन की करबै।

कोसी

माइहे कतेक
हम कनलौं-खिजलौं
कतेक नोर बहेलौं
सनइ-पटुआ कास-पटेर
अल्हुआ-मरूआ उपजा कऽ
गुजर-बसर हम केलौं
सहलौं बड़-बड़ कष्ट
बाढ़िमे घर-द्वार विहिन
चैन-विवेके हम रहलौं
सोचि-सोचि कऽ
समए बितेलौं व्यर्थ-फिजुल
कऽ देलिऐ मिथिलाकेँ दू-भागमे अहाँ
पूबमे सहरसा-सुपौल
पछिममे मधुबनी-दरभंगा
बिचमे अगबे बालु आ धूल
कहू आब कतेक चुप रहब
ऐबेर हम बना देलौं पुल
रोजी-रोटीक अवसर भेटल
हँसै छल जे दुनियाँ आब हमरा देखत
शिक्षाक नव-ज्योति जागत
जाएत पढ़ैले बेटा-बेटी कओलेज-स्कूल
माइहे कतेक
हम कनलौं-खिजलौं
कतेक नोर बहेलौं।

मच्छर रानी

सूनसान रातिमे
चुपचाप
नंगे पएर
लग अबैए
भन-भन करैत
छोट-नटखटी सुकुमारी
प्यारी-दुलारी
मच्छर रानी
चोंच नोकिला
नयन कटिला
अछि बड़ सियानी
उघार देह देखि कऽ
करैए हमरा संग छेड़खानी
कखनो गाल-चुमैए
कखनो खून चुसैए
प्यास नै लगैए जेना
कहाँ पिबैए पानि
भरि राति जागि कऽ
हम एकरा संगे
राति बितबै छी
होइए बड़ परेसानी
आब एकरासँ
बचबाक करब उपाइ
रोजे राति कऽ लगाएब मच्छरदानी
सूनसान रातिमे

चुप-चाप
नंगे पएर
लग अबैए।

हरिजन

हिन्दु मुसलिम
सिख ईसाइ
सभकेँ कहै छी
सभसँ पुछै छी
किएक भेल
दू रंगक मोन
हम दलित छी
मेहनति-मजदुरी
कए कऽ बितबै छी
अपन जीवन
तैयो जरैत अछि
लोक देखि कऽ
जरै केकरो तन
करै अछि
छुआ-छूतक भेद-भाव
मंदिर पूजाघर
जेबासँ करैत अछि
वंचित एखनो
एकैसम सदीमे
हरिजनक संग
किएक कऽ रहल छी
अहाँ सभ अनुचित
हिन्दू-मुस्लिम-सिख ईसाइ।

हम छी मैथिली

हम छी मैथिल
जे बजै छी
वएह लिखै छी
जे देखै छी
वएह कहै छी
स्वयं दलित छी
दलितक दरद जनै छी
किछु व्यक्तिक
किरदानीसँ चकित छी
दलित भऽ कऽ ओ
व्यक्ति अपनो समाजकेँ
बिसरि गेल
अप्पन भाषा-भेष छोड़ि कऽ
दोसरक रंग-ढंगमे ढलि गेल
नाओं मात्रसँ दलित
कर्मसँ बहुरूपिया
बनि गेल
साहित्य जे समाजक
आइना मानल जाइए
ओहूमे अप्पन
नामक खातिर
अप्पन बोली-भाषा
तक बिसरि गेल
तइ दुआरे दलितक स्थिति
जस-के-तस रहि गेल
हम छी मैथिल।

बौकी

मांगि-चांगि कऽ बौकी
जीवन अपन बितबैए
कोइ दइ बाइस भात-रोटी
कोइ दइ फाटल-पुरान वस्त्र
ओइ फाटल वस्त्रसँ
झाँपने अपन तन
बेइमान भेल अछि
लोकक नजर।
उजरल-पुजरल अछि ओकर
टुटलघर।
बसल अछि ओ गामक कातमे
जिनगीक फिकिर नै अछि ओकरा
इज्जतिक छै डर
पोसने अछि दुगो सुगर।
जे भागल फिरैए
गाछिये-गाछी-बासे-बाँस
चरबै ले जाइए
दिन-दुपहर।
ऐ दुनियासँ अछि ओ बेखबर
मांगि-चांगि कऽ बौकी
जीवन अपन बितबैए।

चौके-चौक

समए-साल
बदलल लोकक
सोच बदलल
एम्हर प्रसाशन
भेल अछि बौक
सिरका तारी
गाजा-भाँगकेँ
आब के पुछैए
देशी-विदेशी
इंग्लिश दारू भेटैए
चौके-चौक
एक सालमे
दारू पिबनिहार सभ
मिल कऽ लगौलक जोर
साँझ-विहान-भोर
सरकारी राजस्वमे
बढ़त भेल
अही बेर दारूसँ
साढे तीन करोड़
पीब कऽ दारू जनता मरए
दिन-दुगुना
राति चौगुनाक दरसँ
आमदनी बढ़ए
सरकार कहए हमर
ऐमे कोन दोख
समए-शाल
बदलल लोकक।

ठेँस

लागल जखन
ठेँस जीवनमे
सही डगरपर
चलनाइ सिखि
लेलौं हम
जेकरा बूझै
छलौं अपन
सफर केर साथी
आइ दुख परलापर
असली रूप
हिनको देखेलौं हम
चलैए परत
अनगिनित बाटपर
हमरा असगरे
आइ जानि गेलौं हम
कतौ काँट भेटत बाटमे
कतौ फूल भेटत बाटमे
सभ संगे
सभ किछु
सहि कऽ रहनाइ
आइ सिखि गेलौं हम
केतने आएत
हमरा ऊपर
विपत्तिक बादल
समस्यासँ लड़नाइ

सिखि गेलौं हम
लागल जखन
ठेँस जीवनमे।

पेटक खातिर

पेटक खातिर
जीवन नै भेल
कखनो अस्थिर
कहियो चैत मासमे
लड़ैत लह-लह लूसँ
जरैत रौदमे
घामसँ तर-बत्तर
कोदारि पारलौं
बसिया भात तँ
कहियो नून-रोटी
खा कऽ रहलौं
कहियो खुद्दी फाँकि कऽ
पानि पीब सुतलौं
बाल-बच्चाकेँ छोड़ि
दिल्ली-पंजाबमे
रिक्सा घिचलौं तँ
पिट्ठीपर बोरा उठेलौं
तैयो कर्जदारक
ताना-बाना बात कहिनी
सुनलौं ओकर
बेगारी करलौं
चारि सेर बोनि लेल
लोकक खेतमे
भरि दिन खटलौं
मुँह-पेट बान्हि कऽ

अहुमे सँ जोगा कऽ रखलौं
बर-बेमारी भेल
बाल-बच्चाकेँ तँ
कोठी पेहना खोलि
घान-चाउर बेचलौं
रौद-बसातमे जरैत
गरीबीसँ लड़ैत हम
जीवन अप्पन गमेलौं
पेटक खातिर
जीवन नै भेल।

जगदीश बाबू

हम छी सेवक
मैथिल
जगदीश बाबूक
चेला
नै हमरा लड़ू खियौलनि
नै देलथि मिश्रीक ढेला
तैयो
हम छी सेवक मैथिल
जगदीश बाबूक
चेला
गुरुजी छथिन हमर
बड्ड महान्
साहित्यक छथि पइघ
विद्वान
मधेश मिथिलामे
हिनक अलग पहिचान
जएह बजै छथि
वहए करै छथि
वएह लिखबो करै छथि
तमोरिया लग बेरमा अछि
हिनक गाम
दर्शन करबाक
मोन होइए हमरा बहुत
मुदा छी हम अकेला
तैयो

हम छी सेवक मैथिल
जगदीश बाबूक
चेला
गामक जिनगी
मौलाइल गाछक फूल
मिथिलाक बेटी
जीवन-सघर्ष, जीवन-मरण
उत्थान-पतन
पढ़ि कऽ हमर उत्साहसँ
बढ़ल मोन
उठेलौं हमहूँ कलम
लिखै छी कविता
तँए
हम छी सेवक
मैथिल........।

उजरल घर

उजरल घर
तवाहीक मंजर
देखि कऽ हम
वेदनामे डुमल रहै छी
खुला आसमानक निच्चा
जानवरसँ बत्तर
रौद-बसातमे
कष्ट सहि कऽ रहै छी
गरजैत मेघ
घनघोर बादल
पानि-बर्खाक संग बाढ़िमे
दहाइत लहाश
उजरल घर
लोकक चितकार
देखै-सुनै छी
गरीबक जिनगी
निहत्था योद्धा
रेतपर बनल घर जकाँ
अखन बुझै छी
कष्टक मारल
विपत्तिक आगाँ हारल छी
जिऐ छी नै
मरै छी बीचमे
परि कऽ हुकुर-हुकुर करै छी
उजरल घर
तबाहीक मंजर।

जीवनक नैया

जोर भेलै
पानिक धार
कोसी-कमला
बलानमे
गे माइ
रहि-रहि उठै छै
उफान
डरसँ निकलैए
हमर जान
गे माइ
तूहीं जगक
पालनहार
तोरे करै छी
बेर-बेर गोहारि
गे माइ
हमर जीवनक
नाहक खेबैया
तूहीं लगेबैँए
आब पार
गे माइया
माटिक मुरुत
बनि कऽ एना किआ बैसल छी
दुख आब हमरा
सहलौ नै जाइए
जान कौड़ीक

मोल जेना बुझाइए
गे माइ
जोर भेलै
पानिक धार।

डर

हे यौ केना कहै छिऐ
नै छै डर
ऑफिसमे हाकिमक डर
घरमे घरवालीक डर
देशमे
आतंकवादी-माओवादीक डर
हे यौ केना कहै छिऐ
नै छै डर
जनताकेँ नेतासँ डर
बापकेँ बेटासँ डर
सासुकेँ पुतोहुसँ डर
बिजली रहितौ
लॉडस्पीकरक डर
खेलमे मैच फिक्सिंगक डर
रूपैयामे जाली नोटक डर
हे यौ केना कहै छिऐ
नै छै डर
गोसाइकेँ भगतासँ डर
मन्दिरक चन्दाकेँ पण्डासँ डर
घी खरिदब तँ
डलडासँ डर
प्रेम करब तँ धोखाक डर
हे यौ केना कहै छिऐ
नै छै डर।

नटीन

झोटा झोटौबलि
हेतौ नटिनिया
तोरा संग अही बेर गे
करबौ हम चुमौन
अही लगनमे
एतौ घरमे सौतीन
उ दिन अबैमे नै छै देरी गे
झोटा झोटौबलि
हेतौ नटिनिया
आठ बजे दिन धरि
सूतल रहै छैँ तूँ
पुरुषसँ करबै छैँ चूल्ही-चौकाक काम
केहेन करै छैँ तूँ अनहेर गे
झोटा-झोटौबलि
हेतौ नटिनिया
रहै छैँ घरमे बैसल
करै छैँ उकटा-पेंची
नैहरे लागे तोरा नीक गे
टोले-टोले घुमल फिरै छैँ
कामक बेरमे अंगनेमे
लागि जाइ छौ दिक गे
झोटा-झोटौबलि
हेतौ नटिनिया
बाबू तोहर गामक मुखिया
बेटी तेकर दुलारी गे

ससुर-भैंसूरकँ दिअर सन बुझै छैं
माथपर किएक नै लइ छैं साड़ी गे
ओल सन तूँ
बोल बजै छैं
केना कही हम तोरा
मिथिलाक नारी गे
झोटा-झोटौबलि
हेतौ नटिनिया।

बताह

गुम-सुम
बैसल रहै ओ
अप्पन हाथक
लकिर निहारि कऽ
हँसैए ओ
गुज-गुज अन्हरिया
रातिमे असगरे
घुमल-फिड़ैए ओ
गित गुनगुनाइत अछि तँ
कखनो जोरसँ
गबैए ओ
हुनक भेष-भुसा देखि कऽ
लोग कहैए हिनका
छथि बताह
सुनि कऽ बिखनि-बिखनि
गारि पढ़ैए ओ
पहिरने फाटल-अंगा-पेंट
नम्हर-नम्हर
केश-दाढ़ी
बढ़ेने रहैए ओ
घूमि-घूमि कऽ
माँगि-चाँगि कऽ खाइए ओ
जखन कियो
दुतकारैए हिनका
बोम फाड़ि कऽ कानैए ओ
कि साँचे बताह अछि ओ?

ज्ञानक नव ज्योति

सभ जन
जागल जखन
भेल सबेर
सुख समृद्ध
ज्ञानक नव ज्योति
दुनिया भरिमे परसत
अपन विहार
ओ दिन अबैमे
नै अछि देरी
अतितकेँ सहेजैमे
लागल छी हम
अप्पन बुधि-कौशलसँ
नव विहारकेँ
गढ़ैमे लागल छी हम
चलब सदिखन
सत् आ विकासक
डगरपर
भूलि कऽ जाति-धरम
लाएब समाजमे
नव क्रांति
मेटाएब भ्रष्टाचार
अशिक्षा, देशक सिरसँ
छुआ-छूतक भेद-भावकेँ
तब हएत बुद्धक विहार

देखत दुनिया नेक नजरिसँ
भेटत सभकेँ समान अधिकार
जय मिथिला
जय बिहार।

केहेन चालि

फुलोपर केना
करी हम भरोषा
बिनु मौसमक
खिलैत अछि ओ
सावन अबैसँ पहिने
नै जानि कतेक
रंग बदलैत अछि ओ
सभ भँवरासँ दोस्ती अछि
हिनका
सभसँ मिलैत अछि ओ
अप्पन कहि कऽ
काँटसँ घाइल कऽ दैत अछि ओ
भँवरा सभ शिकाइत
करैत अछि हिनकर
किएक एहेन चालि चलैए ओ
कतौ और जख्म
दिए तँ बरदास कऽ लेब
मुदा करेजमे काँट जकाँ गरैत अछि ओ
नै जानि एहेन चालि
कत्तएसँ सिखि कऽ आएल अछि ओ
फुलोपर केना
करी हम भरोष।

वसन्त

आएल वसन्त
नव जिवन लऽ कऽ
हर प्राणीमे उमंग भरि कऽ
गाछ-वृक्षमे
नव कनोजरिक संग
मोजर फूल निकलैत अछि
खेतमे गहुम-खेसारी
तिसी-मसुरी
तोरीक फूलसँ
समुच्चा बाध गमकैत अछि
मधुमाछी लगौने
सेनुरिया आमक गाछपर छत्ता
देखि कऽ लुक्खी डरैत अछि
अरहुलक फूल चूसि कऽ
फुलचोभी चिहुकैत अछि
कौआ आ कोइलीमे
भेल अछि कनाइर
कोइलीक बोली सुनि कऽ
अबैए कौआ भऽ जाइए मारि
सिमरक फड़ देखि कऽ
सुग्गा पकैक बेर तकैत अछि
भेल विहान जखन
चिहू-चुहिया प्रेमक मधुर
संदेश परसैत अछि

लखन काका गबैत अछि प्राती
देव-पितरकेँ जपैत अछि
वसंती हवामे स्वर्गक
आनन्द अबैत अछि
जाएल वसंत
नव जीवन लऽ कऽ।

योद्धा

सत्यक भीड़सँ
निकलल योद्धा
बन्हने तीर-कमान
मायवी ऐ दुनियामे
देखि रहल अछि
ऊपर-निच्चा
सोचि रहल अछि
कतए खोजब- कतए ताकब
के भेटत धरम-मार्गपर
चलनिहार नीक इनसान
सगरे पसरल अछि
अत्याचार
मनमे स्वार्थ-द्वेष भड़ल अछि लोककँ
केकरासँ पूछब
के कहत के अछि वीर हनुमान
सभ लगौने चन्दन-टीका
पंडित बूझी आकि शैतान
त्रेता-द्वापर युगसँ
अखनि धरि
कते चलाएब
गद्दा-सुदर्शन चक्र-तीर-कमान
कते बनाएब ऐ धरतीकँ
लहू-लहुआन
ओहिना एतए
कानि रहल अछि

जपानक हीरो-सीमा
भारतक बंगालमे भेल
गैंस अग्नीकाण्ड
सत्क भीड़सँ
निकलल योद्धा।